P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-12* August- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा में परिवर्तन : एक अध्ययन

मीनाक्षी व्यास
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
रा0स्व0ग्रा0उ0 पी0जी0 कालेज,
पुखरायाँ, कानपुर देहात

सारांश

प्राचीन समय में जिस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विदुषी महिलाएँ हुई, जिसमें वैदिक काल की महिलाओं के नाम भी प्रमुख हैं। उनकी सामाजिक स्थिति भी वैदिक काल में उच्च थी, परन्तु धीरे–धीरे उत्तर वैदिक काल, मुस्लिम काल में सामाजिक एवं शैक्षिक दोनों स्थितियाँ कमजोर होती चली गयी। फिर भी मुस्लिम काल की विदुषी महिलाओं में रजिया बेगम, गुलबदन बेगम, नूरजहाँ, जीजाबाई, दुर्गाबाई आदि प्रमुख हैं। जिनकी शैक्षिक एवं सामाजिक दशा उच्च थीं। ईस्ट इण्डिया के शासनकाल में भी शिक्षा उपेक्षित रही थी। महिला शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। 19वीं शताब्दी में महिलाओं के सामाजिक सुधार एवं उत्थान के लिये गंभीर प्रयास किये गये। भारतीय नारी की सामाजिक दशा सुधारने के लिये श्री राजाराम मोहन राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मागांधी आदि ने भरसक प्रयास किये तथा यह प्रयास सफल भी हुए। यदि वर्तमान समय की बात की ओर ध्यान दिया जाये तो महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वर्तमान में बालकों की शिक्षा के साथ ही बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को स्वीकारा गया है। महिलाओं को पर्याप्त शैक्षिक अवसरों के प्राप्त होने के कारण आज वे प्रत्येक क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही हैं। शैक्षिक स्थिति अच्छी होने के कारण उनको समाज में भी सम्मान जनक स्थान प्रदान किया जा रहा है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा के द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। आज महिला शिक्षा के महत्व को भारतवर्ष में स्वीकार किया गया।

मुख्य शब्द : वैदिक काल, महिला शिक्षा, मुस्लिम महिलाएं।

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज में महिला की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। महिला के सहयोग के बगैर किसी भी राष्ट्र के निर्माण व विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। उनकी सक्रिय भागीदारी के बिना एक राष्ट्र अपनी उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच सकता है। लेकिन सब मान्यताओं के होते हुए भी हमारे समाज में महिलाओं को उचित स्थान प्राप्त नहीं है। महिलायें अभी भी पुरूष के अधीन हैं। वे अपनी इच्छानुसार कोई भी कार्य नहीं कर सकती हैं। आज जबकि समाज ने काफी उन्नति कर ली है, जबकि भारतीय नारी की परिभाषा में कोई विशेष अन्तर नहीं आया है। आदिकाल से महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता रहा है किन्तु महिलाओं ने हमेशा उसे सहन किया है। कभी तो मजबूरीवश तो कभी दबाव में। किसी हद तक यही दृष्टिकोण उसकी इस दयनीय दशा का जिम्मेदार या कारण रहा है। यदि उसके अन्दर तनिक भी दृढ़ता रही होती तो इस तरह के परिणाम नहीं भोगने पड़ते। आज सारे संसार में महिलाओं का स्तर मर्दो से नीचे है। भारत भी इससे अलग नहीं है।

आज सामान्य नारी की स्थिति क्या है, यह जानने के लिये प्राचीन काल के पन्ने पलटना अनुचित नहीं होगा। परिवर्तनशीलता के नैतिक नियम के कारण भारतवर्ष में महिला की दशा सदा एक सी नहीं रही है। वर्तमान समय में

यह कहा जाता है कि शिक्षा के द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा का महत्व जीवन में बहुत अधिक है, क्योंकि शिक्षा ही मानव को, चाहे शिक्षा पुरूष के लिये हो या महिला के लिये, निश्चित ही अंधकार से प्रकाश एवं ज्ञान के उजाले की ओर ले जाने वाली होती है। आज भारत में प्रजातंत्र के विकास के लिये सर्वाधिक आवश्यकता शिक्षित महिलाओं व बालिकाओं की है। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिये तैयार करती है और उसके व्यवहार विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिये हितकारी होता है।

जब शिक्षा का सम्बन्ध महिला शिक्षा से जोड़ा जाता है तब शिक्षा के उदीयमान स्वरूप एवं संभावित परिणामों से बहुत आशा की जाती है। शिक्षा से स्वावलंबन की भावना को बहुत अधिक प्रोत्साहन मिलता है, जो जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है, विशेषकर महिलाओं के लिये व्यक्तित्व विकास और कुछ अर्जित करने के स्वावलंबन अनिवार्य है। नारी को पुरूष के समान स्तर पर लाने और उसके चरित्र, सम्मान और गरिमा को बनाने में स्वावलंबन एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है, किन्तु शिक्षा के बिना स्वावलंबन की बात करना असंभव एवं अकल्पनीय है। आज महिला शिक्षा के महत्व को भारतवर्ष में स्वीकार किया गया है और महिला शिक्षा के लिये महत्वपूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं।

आज 21वीं शताब्दी की दहलीज पर भारतीय महिला की शिक्षा एवं सामाजिक स्तर की ऐतिहासिक पन्नों में बंद है। वर्तमान समय में महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पुरूष के समान महिलाओं को भी शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जा रहे हैं। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, साइना नेहवाल, निशाबा गोदरेज, टेसी थामस आदि वर्तमान समय की उच्च शिक्षित एवं सुसंस्कृत महिलायें है, जिन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त है, परन्तु शिक्षा प्राप्त करने के सुलभ अवसर आज भी अमीर वर्गो को प्राप्त है। निम्न वर्गो की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उनकी शैक्षिक एवं सामाजिक दशा आज भी प्रभावित है।

आज देश तेजी से प्रगति कर रहा है। ऐसे समय में महिलाओं को शिक्षा से वंचित करना समाज के विकास के मार्ग को अवरूद्ध करना है। अतः महिलाओं को शिक्षित करके हम मनुष्य के सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक गुणों का विकास कर सकते हैं, क्योंकि शिक्षित महिलायें ही देश के भावी कर्णधारों के निर्माण में अपना सहयोग देती हैं। आज महिला होने पर भी समाज सुधारक के रूप में मदर टेरेसा का नाम सम्मानीय है।

आज हम किसी भी दृष्टि से विचार करें महिला शिक्षा का महत्व उजागर ही होगा और जितना अधिक विचार करें महिला शिक्षा का महत्व उतना ही गंभीर होता जायेगा। आज के युग में महिला शिक्षा का महत्व और बढ़ गया है। इतिहास इस बात का साक्षी है जब–जब इस बात पर ध्यान दिया गया है, तब देश उन्नति के शिखर पर पहुँच गया है। महिला शिक्षा के महत्व को व्यक्त करते हुए पेस्टालाजी ने कहा है कि– **"एक माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है।"**

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है। ऐतिहासिक विधि का प्रयोग इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि क्षेत्रों की समस्याओं के अध्ययन में किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. प्राचीन और वर्तमान समय में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा पर कितना जोर दिया जा रहा है, इसका अध्ययन करना।
3. पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
4. वर्तमान समय में शिक्षा के उपलब्ध अवसरों के उपयोगों का अध्ययन करना।
5. प्राचीन एवं वर्तमान समय की महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक पक्षों का अध्ययन करना।

उपकल्पना

1. प्राचीन और वर्तमान समय में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा में परिवर्तन हुआ है।
2. वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।
3. पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति में सार्थक अन्तर पाया गया है।

4. वर्तमान समय में शिक्षा के उपलब्ध अवसरों का उपयोग किया जा रहा है।

प्राचीन समय में शिक्षा के उच्च स्तर उपलब्ध थे, पुरूषों की भाँति महिलायें भी शिक्षा प्राप्त करने की बराबर की भागीदार थी। प्राचीन काल के वैदिक काल में महिलाओं को बहुत ही गरिमामय एवं गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में बालक एवं बालिकाओं के बीच कोई अन्तर नहीं था, समानता के आधार पर बालकों की भाँति बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार होता था। ऋग्वेद में संकेत मिलते हैं, कि उस समय की महिलायें विद्वान एवं साध्वी थी। उनका शैक्षिक स्तर उच्च था। वैदिक काल में महिलायें पुरूषों के साथ धार्मिक कार्यो में भाग लेती थीं। शिक्षा की समस्त सुविधायें पूर्णरूप से महिलाओं को प्राप्त थी। महिलायें वैदिक साहित्य पढ़ने के लिये स्वतंत्र थीं। वैदिक काल में अनेक विदुषी महिलायें हुईं, जिनमें लोपामुदा, अपाला एवं गार्गी आदि का नाम उल्लेखनीय है। परन्तु उत्तर वैदिक काल में इस दृष्टिकोण में काफी अन्तर आया। महिलाओं का समाज में स्थान निम्न होता चला आ रहा है। शिक्षा का स्तर भी कम होने लगा। उत्तर वैदिक काल में धार्मिक शिक्षा केवल उच्च घरानों की महिलाओं को ही सुलभ थीं। समाज के निम्न वर्ग की बालिकायें शिक्षा के अवसर से वंचित होने लगी।

बौद्ध काल के उदय होने से शिक्षा में कुछ प्रोत्साहन मिला और उनकी शिक्षा के लिये पृथक मठों एवं विहारों का निर्माण किया गया। इस्लाम धर्म के उदय से महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्णता खो दी और इनकी शैक्षिक स्थिति धीरे–धीरे फिर कम होने लगी। उन्हें पर्दा प्रथा के कारण घरों में ही सीमित रखा जाने लगा शिक्षा के अवसर महिलाओं के लिये इस काल में कम थे, उन्हें पृथक रूप से शिक्षा देने का कोई प्रावधान न था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में भी महिला शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। 19वीं शताब्दी की शैक्षिक दशा में धीरे–धीरे सुधार आने लगा। महात्मा गांधी जी ने पुरूषों के समान ही महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया।

वर्तमान समय में महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, पुरूषों के समान स्त्रियों को बराबर शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। महिलाओं का शैक्षिक स्तर ऊँचा हुआ है। आज महिलाओं का प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है। वर्तमान समय में बालिकाओं को भी शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों अच्छे अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। जिनके उपयोग से बालिकाओं का शैक्षिक स्तर अच्छा हुआ है जो समाज की प्रगति में भी सहायक है।

निष्कर्ष

जिस प्रकार प्राचीन समय में महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा को सुधारने हेतु प्रयास किये गये, उसी प्रकार वर्तमान समय में भी महिला शिक्षा एवं सामाजिक दशा को उच्च बनाने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। इस अध्ययन की सहायता से ''प्राचीन और वर्तमान समय की महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक दशा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सका।'' इस अध्ययन से ही महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अध्ययन के द्वारा यह पता चलता है कि प्राचीन समय में महिलाओं को किस प्रकार के शैक्षिक अवसर उपलब्ध थे। प्राचीन समय में महिला शिक्षा की स्थिति क्या थी। प्राचीन समय के अध्ययन की तुलना के आधार पर आज वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में क्या–क्या कदम उठाये जा रहे हैं। उन्हें किस प्रकार के शैक्षिक अवसर प्राप्त हैं। वर्तमान समय में क्या सभी वर्गों की महिलाओं को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं या नहीं। उनकी समाज में स्थिति क्या है। महिलाओं की शिक्षा एवं समाज में उनकी स्थिति को समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्निहोत्री, रवीन्द्र– भारतीय शिक्षा का इतिहास, रतन प्रकाश मंदिर, आगरा*
2. *शर्मा, एल0पी0–भारतीय इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।*
3. *अग्रवाल, बी0बी0–आधुनिक भारतीय शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
4. *अग्रवाल, जे0सी0 –वीमेन एजुकेशन इन इण्डिया कान्सेप्ट, पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
5. *देसाई, एन0– वीमेन इन मार्डन इण्डिया, वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई।*
6. *मदन मोहन– भारतीय शिक्षा का विकास और समस्यायें, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।*